‘लीला हिंदी प्रवाह’

दसवें विश्व हिन्दी सम्मेलन में हिंदी भाषा के प्रचार एवं प्रसार हेतु की गई अनुशंसाओं पर अमल करते हुए राजभाषा विभाग , गृह मंत्रालय के मार्गदर्शन में केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा हिंदी भाषा का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कार्मिकों के साथ-साथ जनसाधारण को हिंदी भाषा का उच्चतर ज्ञान कराने के लिए ‘‘हिंदी प्रवाह’’ नामक एक नया पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। 'लीला हिंदी प्रवाह' से विश्व के प्रत्येक भाग के और प्रत्येक वर्ग के लोग लाभान्वित होंगे। ‘हिंदी प्रवाह’ में अलग-अलग विधाओं के कुल 20 पाठ संकलित किए गए हैं। प्रत्येक वर्ग के पाठक की रुचि के अनुरूप पाठों को ‘हिंदी प्रवाह’ में स्थान दिया गया है।

‘हिंदी प्रवाह’ का भाव पक्ष जितना सबल है , तकनीकी पक्ष भी उतना ही मज़बूत है। इस पाठ्यक्रम को भी ‘लीला पैकेज’ प्रबोध, प्रवीण एवं प्राज्ञ की भाँति अंग्रेजी के अलावा 14 भारतीय भाषाओं क्रमश: असमिया , बोडो, बांग्ला, गुजराती, कन्नड़ , कश्मीरी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, उड़िया, पंजाबी, तमिल एवं तेलुगू के माध्यम से जनसाधारण तक ऑनलाइन वेबवर्जन एवं मोबाइल ऐप के रूप में उपलब्ध कराया गया है।

'लीला हिंदी प्रवाह' के वेबवर्जन एवं मोबाइल ऐप के लिए तैयार किए गए सभी पाठों को, 'पाठ एवं शब्दावली' नामक दो भागों में विभाजित किया गया है। पाठ भाग में ऑडियो-वीडियो सुविधा के साथ-साथ चयनित भाषा में अनुवाद प्राप्त करने की सुविधा उपलब्ध है। शब्दावली भाग में पाठ के सभी शब्दों के अर्थ यूज़र द्वारा चयनित भाषा में भी दिए गए हैं।

'लीला हिंदी प्रवाह ' के वेबवर्जन एवं मोबाइल ऐप में पाठों से संबंधित शब्दों को समझने एवं समझाने के लिए बृहत शब्दावली की व्यवस्था भी की गई है। इस बृहत शब्दावली में पाठों में सम्मिलित शब्दों के अर्थ यूज़र द्वारा चयनित भाषा में वर्णक्रमानुसार दिए गए हैं। इस भाग की विशेषता यह है कि इसमें शब्दों के उच्चारण के साथ-साथ रिकॉर्ड एवं कम्पेयर सुविधा भी उपलब्ध करवाई गई है। यूज़र , पाठ में आए शब्दों का अर्थ अपनी भाषा में देखने एवं जानने के अलावा हिंदी में उनका उच्चारण सुनने के बाद स्वयं उस शब्द को बोलकर रिकॉर्ड कर सकते हैं और फिर मूल शब्द एवं स्वयं द्वारा रिकॉर्ड किए हुए शब्द को एक के बाद एक सुनकर उच्चारण संबंधी अपनी कमियों को दूर कर सकते हैं। यूज़र, अपनी सुविधा के अनुसार जब चाहें , जितना चाहें और जितनी बार चाहें , इस पाठ्यक्रम को पढ़ सकते हैं।

अंत में यह कहना उचित होगा कि **‘हिंदी प्रवाह’ राजभाषा विभाग की ओर से गागर में सागर भरने का एक प्रयास है।**